Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 17, Issue: March 2026 | Impact Factor 5.275

सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा की प्रमुख विष्णु प्रतिमाएँ

शालिनी पाठक
अतिथि व्याख्याता, इतिहास विभाग, एस. एस. जे. परिसर, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

हिन्दू सम्प्रदायों में वैष्णव सम्प्रदाय का एक विशिष्ट स्थान है। ऋग्वेद (1/155/5, 7/99/2) में उन्हें केवल आदित्य मात्र माना गया है और दिन भर की यात्रा केवल तीन पगों में पूरी करने के कारण ही उनका यशोगान प्रतीत होता है। विष्णु के तीन पद सूर्य पथ के बोधक हैं। अधिकांश विद्वानों ने स्वीकार किया है कि विष्णु के तीन पद सूर्य के उदय, मध्याह्न और अस्त के प्रतीक हैं। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार इन तीन पदों में सौर देवता के तीन लोकों में से होकर जाने का मार्ग अभिप्रेत है। (अवस्थी, 1967, पृष्ठ 57) विष्णु के ये तीन पद वेदोत्तरकालीन साहित्य में विष्णु के वामनावतार के लिए पथ तैयार करते हैं। (सूर्यकान्त, 1961 पृष्ठ 86)

उत्तर वैदिक काल में विष्णु का महत्व धीरे–धीरे बढ़ गया। शतपथ ब्राह्मण (14/1/1/5) के अनुसार देवताओं द्वारा आयोजित यज्ञ में विष्णु को प्रमुख स्थान प्राप्त था और इस ग्रंथ में विष्णु को अन्य सभी देवताओं की अपेक्षा श्रेष्ठ बताया गया है। (बनर्जी, 1974 पृष्ठ 386) के अनुसार महाकाव्यों और पुराणों के समय में विष्णु परवर्ती हिन्दू त्रिदेवों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता बन गए। किन्तु वे विष्णु जो बाद में वैष्णव सम्प्रदाय के केन्द्र बिन्दु हुए, तीन देवों के समन्वय का परिणाम थे – ऐतिहासिक देवता वासुदेव कृष्ण, वैदिक सौर देवता विष्णु और ब्राह्मण ग्रन्थों के जगतिक देवता नारायण। भक्ति सम्प्रदाय के विकसित होने पर जिसे वैष्णव सम्प्रदाय कहा गया के मूल में सात्वत नायक वासुदेव कृष्ण थे।

हिन्दू त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में विष्णु द्वितीय हैं तथा समस्त सृष्टि के संरक्षक/पालनकर्त्ता हैं। (Wilkins, 1972 116) विष्णु के दो अर्थ हैं –'विष' धातु से निष्पन्न 'विष्णु' शब्द क्रियाशील अर्थ घोषित करता है तथा 'स्नु' धातु से निष्पन्न होने पर इसका अर्थ पृथ्वी आदि लोकों पर अतिक्रमण करने वाला है। (रंजना, 1988, पृष्ठ 164) महाभारत (शांतिपर्व, अध्याय 341, श्लोक 42–43) में भगवान कृष्ण कहते हैं कि पृथ्वी व आकाश मुझमें व्याप्त है, मेरा विस्तार अत्यधिक है इसी कारण मैं विष्णु कहलाता हूँ। हिन्दू त्रिदेवों में विष्णु के सृष्टि संरक्षण स्वरूप के विपरीत भागवत/वैष्णव सम्प्रदाय में विष्णु सर्वोच्च देवता के रूप में प्रतिष्ठित हैं। (श्रीवास्तव, 1998, पृष्ठ12) भागवत सम्प्रदाय (बनर्जी, 1974 पृष्ठ 387) में विष्णु के पाँच रूप माने गए हैं – 1. पर (सर्वोच्च) 2. व्यूह (उद्भूत) 3. विभव (अवतार) 4. अन्तर्यामी (अदृश्य एवं भक्तों के हृदय में) 5. अर्चा (मूर्त रूप)।

PURVA MIMAANSA

ई. पू. के अनेक अभिलेखों में भागवत देवगृहों का उल्लेख मिलता है। घोसुण्डी अभिलेख में दो देवताओं संकर्षण और वासुदेव के देवायतन का उल्लेख हुआ है जिसके चारों ओर प्रथम शती ई. पू. में एक प्रस्तर वेदिका निर्मित हुई थी। (अग्रवाल, 1964, पृष्ठ 14) दूसरी शती ई. पू. के बेसनगर स्तम्भ लेख में उल्लेख हैं कि वासुदेव की भक्ति में भागवत हेलियोडोरस ने एक गरूड़ध्वज की स्थापना की। (अग्रवाल, 1964, पृष्ठ 14) हेलियोडोरस तक्षशिला निवासी दिय (दियन) का पुत्र और विदिशा के राजा भागभद्र की राजसभा में यवनदूत था। भेलसा से प्राप्त एक अन्य गरूड़ स्तम्भ लेख से ज्ञात होता है कि बेसनगर में एक अन्य विष्णु मंदिर था जिसमें गौतमीपुत्र द्वारा गरूड़ध्वज की स्थापना की गई। स्पष्ट है कि ई. पू. में विष्णु मंदिरों की स्थापना होने लगी थी।

विष्णु प्रतिमाओं का निर्माण

कुषाण काल :—विष्णु प्रतिमाओं का निर्माण कुषाणकाल से प्रारम्भ हो गया था। कुषाणकालीन विष्णु प्रतिमाएँ अधिकांशतः चतुर्भुजी हैं। ये गदा, चक्र, शंख और कभी—कभी जल—पात्र को धारण किये हुए हैं तथा निचला दाहिना हाथ अभयमुद्रा में निर्मित हैं। अपेक्षाकृत कम अलंकरण युक्त ये प्रतिमाएँ अधिकांशतः उभयवर्ती निर्मित हैं तथा इनमें साधारणतः परिवार देवताओं का अभाव था। (जोशी, 1970, पृश्ठ 42) कुषाण काल में विष्णु के आयुध पूरी तरह निश्चित नहीं हो पाये थे। विष्णु द्वारा धारण किया अमृत—घट की गर्दन लम्बी, पेटा गोल, लम्बा और पेंदा तिकोना है। अमृत—घट की यह आकृति कुषाणकालीन बोधिसत्त्व मैत्रेय के अमृतघट से मिलती है। हाथ में जल—पात्र या अमृत—घट इस काल की देवमूर्तियों की विशेषता है। (अग्रवाल, 1964, पृष्ठ 59) मथुरा से प्राप्त कुषाणकालीन विष्णु की एक आसन प्रतिमा में गदा देवी व चक्र पुरूष का भी अंकन हुआ है। (श्रीवास्तव, 1998, पृष्ठ 328) कुषाणकालीन बुद्ध एवं बोधिसत्वों की प्रतिमाओं के समान ही कुछ कुषाणयुगीन विष्णु प्रतिमाओं में भी भौंहों के मध्य गोल चिह्न (ऊर्णा) अंकित है। (जोशी, 1970, पृश्ठ 47) तत्कालीन विष्णु प्रतिमाओं में श्रीवत्स चिह्न अंकित नहीं है। संभवतः कुषाणकालीन शिल्पियों में यह परम्परा स्थापित नहीं थी। (जोशी, 1965, पृश्ठ 311—17)

गुप्त काल :—गुप्तकाल में विष्णु प्रतिमाओं के अंकन में अनेक रूपों का विकास हुआ। गुप्त शासक ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे तथा इनकी उपाधि परम भागवत थी। इस काल में विष्णु की स्थानक और आसन मूर्तियों के अतिरिक्त उनके शेषशायी रूप, वराह, नरसिंह आदि अवतारों का अंकन होने लगा था। (अवस्थी, 1967, पृष्ठ 63) इस काल की प्रतिमाओं में सौम्य मुखाकृति, सुन्दर केशरचना, चारों हाथ प्रलम्बावस्था में दिखलाना, आयुध पुरूषों के रूप में परिवार देवताओं का अंकन, अलंकृत/अनलंकृत प्रभामण्डल, आजानुलम्बिनी वनमाला आदि उल्लेखनीय हैं। (जोशी, 1965, पृश्ठ 42)

स्थानक विष्णु प्रतिमा :—वृहत्तसंहिता (58/31—35) के अनुसार विष्णु की प्रतिमा द्विभुजी, चतुर्भुजी या अष्टभुजी हो। द्विभुजी प्रतिमा में विष्णु का दायाँ हाथ अभय—मुद्रा में तथा बायाँ हाथ शंख धारण

किए हो। चतुर्भुजी प्रतिमा में दाहिने हाथ अभय–मुद्रा तथा गदा धारण किए हुए तथा बायाँहाथ शंख और चक्र युक्त हो। विष्णु की अष्टभुजी प्रतिमा में दाएँ हाथों में खड्ग, गदा, बाण तथा अभय–मुद्रा में तथा बाएँ हाथों में धनुष, खेटक, चक्र, एवं शंख धारण किए हुए हैं। विष्णु की प्रतिमाओं को सर्वाभरणभूषित निर्मित किए जाने का उल्लेख वृहत्तसंहिता में प्राप्त होता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण (85/1–15) में वासुदेव के रूप में विष्णु का उल्लेख प्राप्त होता है। इस पुराण के अनुसार चतुर्भुजी वासुदेव के ऊपरी दाएँ हाथ में पद्म तथा ऊपरी बायाँ हाथ शंख धारण किए हुए हों। दक्षिण अग्रहस्त चामरधारिणी गदा देवी के सिर तथा वाम अग्रहस्त चमारधारी चक्र पुरूष के सिर पर स्थित हो। उनके पैरों के मध्य पृथ्वी देवी अंकित हो। विष्णु का कटिवस्त्र एवं वनमाला जंघा तक तथा यज्ञोपवीत नाभि तक लटकता हुआ अंकित हो। विष्णु की यह प्रतिमा सुन्दर दर्शन युक्त तथा सर्वाभरणभूषित निर्मित की जानी चाहिए। अग्निपुराण (44/47–49) के अनुसार चतुर्भुजी विष्णु के दाएँ हाथों में चक्र व पद्म एवं बाएँ हाथों में शंख तथा गदा धारण किए हुए हों। विष्णु के पार्श्वों में 'श्री' तथा वीणाधारिणी 'पुष्टि' का अंकन हो तथा गजों एवं अन्य पशुओं से अलंकृत उनके प्रभामण्डल में मालाधारी विद्याधरों का एक युगल भी उत्कीर्ण हो।

1. अल्मोड़ा नगर के पूर्व पश्चिमोत्तर भाग पलटन बाजार में सिद्ध बाबा नौले (बावड़ी) के वाम पार्श्व में विद्यमान श्री बद्रीनाथ मंदिर (लगभग 18वीं भाती ई. में निर्मित) के गर्भगृह में विष्णु की विशाल परिकर युक्त प्रतिमा मूल देवता के रूप में स्थापित है। इसमें फुल्ल पद्म पर समपाद स्थानक मुद्रा में खड़े चतुर्भुज विष्णु सिर पर भारी अलंकृत किरीट–मुकुट धारण किए हैं। वे कानों में रत्न–कुंडल, गले में हार, बाहों में अंगद, कलाइयों में कंकण, स्कन्ध में ढीला यज्ञोपवीत, पैरों में नूपुर एवं अधोवस्त्र धारण किए हैं। कटि में कांची की लटकती हुई लड़ियाँ विष्णु के श्रोणी प्रदेश को भोभित कर रही हैं। इन लड़ियों पर छोटी–छोटी घण्टियाँ भी लगी हुई हैं। उनके नेत्र उन्मीलित और नासिका सुस्पष्ट है। विष्णु के वरद–मुद्रा में प्रदर्शित पहले हाथ में पद्म–पुष्प, दूसरे में वृहदाकार गदा, तीसरे में चक्र और चौथे में उदग्र भांख अंकित है। उनके मस्तक के पीछे कमल–पत्रांकित बहुत ही सुन्दर और विशाल शिर्ष चक्र है जिसके दोनों ओर एक–एक फूलमालाधारी विद्याधर उत्कीर्ण हैं। विष्णु के दोनों ओर की भुजाओं के समीप एक–एक उपासक करबद्ध–मुद्रा में बैठे प्रदर्शित हैं। नीचे प्रधान देव–प्रतिमा के दाएँ–बाएँ पार्श्वों में क्रमशः चक्र एवं भांख पुरूष खड़े हैं। दोनों विशाल करण्ड–मुकुट धारण कर अपने एक हाथ में संबन्धित आयुध लिए हैं। दाईं ओर चक्र पुरूष के पीछे विष्णु वाहन गरूड़ पुरूष विग्रह में खड़े हैं। उनके सिर पर नाग फन का घटाटोप है। उनका दायाँ हाथ स्तुतिमुद्रा में ऊपर उठा है और बायाँ कट्यवलम्बित है। इसी प्रकार बाईं ओर भांख पुरूष के पीछे देवी पृथ्वी खड़ी हैं। देवता के पद्म–पीठ के एक ओर भक्त अंजलि–मुद्रा में हाथ जोड़े बैठा है और दूसरी ओर इसी मुद्रा में एक भक्त नारी बैठी है। प्रभावली में देवता के सिर के ऊपर ब्रह्मा, विष्णु (सूर्य–नारायण के रूप में) और शिव की छोटी

PURVA MIMAANSA

प्रतिमाएँ उत्कीर्ण कर हिन्दू त्रिमूर्ति का प्रदर्शन किया गया है। केन्द्र में योगासन–मुद्रा में सूर्य नारायण की प्रतिमा निरूपित है जिसके ऊपरी दोनों हाथों में पद्म शोभित है। विष्णु के दाईं ओर ब्रह्मा की त्रिमुखी और चतुर्भुजी प्रतिमा है। वे ललितासीन बैठे हैं और उनकी लटकती हुई दाढ़ी है। उनके चारों हाथों में क्रमशः पहला हाथ अभय–मुद्रा में एवं अन्य हाथों में स्रुव, पुस्तक एवं कमण्डलु अंकित है। विष्णु के बाईं ओर शिव की ललितासीन प्रतिमा है। चतुर्भुज शिव का पहला हाथ अभय–मुद्रा में है तथा शेष तीन हाथ क्रमशः त्रिशूल, सर्प और कमण्डलु युक्त हैं। इन त्रिदेवों के मध्य में नवग्रहों का पंक्तिबद्ध सुन्दर रूपांकन किया गया है। ब्रह्मा के दाएँ पार्श्व में एवं शिव के बाएँ पार्श्व में एक–एक नारी आकृति त्रिभंग मुद्रा में खड़ी प्रदर्शित हैं।

प्रभावली में विष्णु के कई अवतार उत्कीर्ण हैं, प्रधान मूर्ति के दाईं ओर नरसिंह, वराह, राम और मत्स्य तथा बाईं ओर कल्कि, वामन, परशुराम और कुर्म। राम के दाईं ओर एवं परशु के बाईं ओर एक–एक नारी आकृति खड़ी हैं जो सम्भवतः विष्णु की पत्नियाँ 'श्री' और 'पुश्टि' हैं। प्रतिमा के मध्य परिकर में गज–सिंह–व्याल का चित्रण सजीवता से किया गया है। ब्रह्मा एवं शिव के समानान्तर कुवलयापीड–वध का दृश्य दिखाया गया है। जिसमें भगवान कृश्ण खड्ग से कुवलयापीड नामक हाथी का वध करते हुए चित्रित हैं। सूर्य नारायण देव के दाईं ओर विष्णु के त्रिविक्रम अवतार की सुन्दर प्रतिमा अंकित है। इसके अतिरिक्त उक्त स्थान पर अन्य पार्श्व चरों का अंकन किया गया है। प्रतिमा के ऊपरी परिधि बनाता परिकर में कुछ वाद्ययन्त्रों को बजाते हुए गंधर्वों एवं फूलमाला लिए हुए विद्याधरों का चित्रण किया गया है। सुन्दर अलंकरण, शरीर का मनोहारी संतुलित गठन एवं पार्श्वचरों में वैश्णव विशिष्टताएँ लिए यह प्रतिमा लगभग 12–13 वीं शती ई. की प्रतीत होती है। (चित्र सं. 1)

2. प्रस्तुत प्रतिमा नंदादेवी मंदिर परिसर के समीप स्थित विष्णु मंदिर में प्रदर्शित है। इसमें विष्णु पद्म–पीठ पर समभंग मुद्रा में खड़े हैं और वे बहुत ही अंलकृत विशाल किरीट–मुकुट, रत्न–कुंडलों, हार, ग्रैवेयक, केयूरों, कंकणों, कांची, अलंकृत विशाल वनमाला, कटिवस्त्र एवं नूपुरों से सज्जित हैं। उनके स्कन्ध पर ढीला यज्ञोपवीत एवं वक्ष पर श्रीवत्स चिन्ह शोभायमान है। कांची की लटकती हुई लडियाँ विष्णु के श्रोणी प्रदेश को शोभित कर रही हैं। विष्णु के स्कन्ध पुष्ट एवं कटि क्षीण है। कमल संपुट से विशाल नेत्रों के बीच सुस्पश्ट नासिका अवलोकनीय है। वह दक्षिणाधः कर में पद्म, दक्षिर्णोध्व कर में वृहदाकार गदा, वार्मोध्वकर में चक्र एवं वामाधः कर में उदग्र भांख धारण किए हुए हैं। उनके मस्तक के पीछे कर्णिका युक्त मनोहर शिर्ष चक्र है जिसके दाएँ एवं बाएँ क्रमशः ब्रह्मा और शिव ललितासीन हैं। लम्बकूर्च ब्रह्मा पहले हाथ में अक्षमाला, दूसरे में स्रुव, तीसरे में पुस्तक और चौथे में कमण्डलु अंकित है। जटा–जूट धारी शिव का पहला हाथ अभय–मुद्रा में तथा शेष अन्य तीन हाथों में वह क्रमशः त्रिशूल, सर्प एवं कमण्डलु धारण किए हैं। ब्रह्मा के दाईं ओर एवं शिव के बाईं ओर एक–एक नारी आकृति त्रिभंग मुद्रा में खड़ी हैं। सम्भवतः देवी सरस्वती एवं देवी उमा है। मध्य परिकर में दाईं

ओर त्रिफण युक्त एक पुरूष आकृति त्रिभंग मुद्रा में प्रदर्शित है जो सम्भवतः नागराज हैं। नागराज के दाएँ हाथ में पद्म या पुष्प एवं बायाँ हाथ कटिसंस्थित है। मध्य परिकर में बाईं ओर इसी मुद्रा में सर्वाभरणभूशित देवी खड़ी हैं जो सम्भवतः देवी लक्ष्मी हैं। उनका दायाँ हाथ अभय–मुद्रा में प्रदर्शित है तथा बाएँ हाथ का आयुध स्पष्ट नहीं है।

नीचे प्रधान देवता के दाएँ–बाएँ पार्श्वों में क्रमशः भांख और चक्र पुरूष खड़े हैं। दोनों अपने एक हाथ में संबन्धित आयुध लिए हैं। भांख पुरूष के पीछे देवी पृथ्वी खड़ी हैं। उनका दायाँ हाथ कट्यवलम्बित है और बायाँ चँवर युक्त है। इसी प्रकार चक्र पुरूष के पीछे विष्णु के वाहन गरूड़, पुरूष विग्रह में खड़े हैं। उनके सिर पर ऊर्ध्वकेश हैं, उनका दायाँ हाथ स्तुति मुद्रा में ऊपर उठा है और बाएँ हाथ में सर्प धारण किए हैं। भूदेवी एवं गरूड़ के पीछे एक–एक विशाल करण्ड–मुकुट धारण किए हुए पद्म पुरूष निरूपित हैं। उनके एक हाथ में पद्म–पुष्प एवं दूसरा हाथ कट्यवलम्बित है। देवता के पद्म–पीठ के दाईं ओर भक्त अंजलि–मुद्रा में हाथ जोड़े बैठा है और बाईं ओर एक भक्त नारी इसी मुद्रा में बैठी हैं। दोनों चरण–चौकी पर वीरासन–मुद्रा में विराजमान हैं। पंचपाद्य युक्त यह प्रतिमा लगभग 12–13 वीं भाती ई. की प्रतीत होती है। (चित्र सं. 2)

3. अल्मोड़ा नगर से प्राप्त विष्णु की एक प्रतिमा राजकीय संग्रहालय, अल्मोड़ा में संग्रहित है। इसमें चतुर्भुज विष्णु अलंकृत चरण–चौकी में निर्मित द्विदलीय पद्म–पीठ पर सम्पाद–मुद्रा में खड़े हैं। किरीट–मुकुट, मकर–कुण्डल, हार, यज्ञोपवीत, वनमाला आदि से सुसज्जित विष्णु का दायाँ अग्र हाथ वितर्क मुद्रा में प्रदर्शित है। शेष अतिरिक्त हाथों में वह गदा, चक्र एवं शंख धारण किए हुए हैं। विष्णु के दाईं ओर त्रिभंग मुद्रा में पद्म पुरूष और बाईं ओर उसी मुद्रा में चक्र पुरूष का अंकन किया गया है। प्रतिमा का ऊपरी परिकर क्षतिग्रस्त है। भौलीगत आधार पर यह प्रतिमा लगभग 12 वीं भाती ई. की निर्धारित है। **शायन विष्णु प्रतिमा** :– विष्णु प्रतिमाओं का प्रचलन कुषाणकाल से प्रारम्भ हुआ और गुप्तकाल में विष्णु के शेषशायी रूप का विकास हुआ। (अवस्थी, 1967, पृष्ठ 82) कालिदास कृत रघुवंश में विष्णु के शेषशायी स्वरूप का सर्वप्रथम वर्णन मिलता है। (रघुवंशः 13/6) विष्णुधर्मोत्तरपुराण (81/2–8) में शेषशायी विष्णु पद्मनाभ नाम से वर्णित हैं। इस वर्णन के अनुसार विष्णु पद्मनाम जल के बीच पड़े शेष पर शयन करते हों। उनका एक चरण लक्ष्मी की गोद में तथा दूसरा शेष की गोद में रखा हो। उनकी नाभि से उत्पन्न कमल पर ब्रह्मा प्रदर्शित हों और कमलनाल से संलग्न मधु एवं कैटभ असुर हों। शेष के समीप विष्णु के आयुध पुरूषों का अंकन हो। अपराजितपृच्छा व रूपमण्डन में विष्णु का यह रूप जलशायी नाम से वर्णित हुआ है। अपराजितपृच्छा (219/1–9) के अनुसार किरीट–मुकुट, कुंडल, हार, और केयूरों से अलंकृत विष्णु शेष पर्यंक पर शयन करते हों। चतुर्भुजी विष्णु के चार हाथों में दाहिना हाथ सिर पर और दूसरा हृत्कमल पर स्थित हो तथा बायाँ उर्ध्व व अधः क्रमशः चक्र और गदा से युक्त हों। रूपमण्डन (3/29–30)में विष्णु के नाभिपंकज पर धाता, विष्णु के

PURVA MIMAANSA

सिर के निकट श्री एवं भू देवी, दोनों पार्श्वों में मधु और कैटभ तथा निधि आदि के चित्रित होने का उल्लेख है।

1. अल्मोड़ा नगर के कपीना मुहल्ले में स्थित कपीना नौले में विष्णु की एक शायन प्रतिमा विद्यमान है। प्रतिमा में चतुर्भुजी विष्णु सप्तफर्णी शेष–शय्या में विराजमान दर्शाये गए हैं। वे किरीट–मुकुट, कुंडल, ग्रैवेयक, कंठहार, वनमाला, भुजबंध, एवं घुटनों तक अलंकृत धोती आदि से भूषित हैं। विष्णु शीर्ष को सहारा दिए हुए उर्ध्व दक्षिण हस्त में कमल धारण किये हुए हैं और अधो दक्षिण हस्त में शंख भोभित है। विष्णु के उर्ध्व वाम हस्त में गदा तथा अधो वाम हस्त में चक्र अंकित है। विष्णु का बायाँ पैर घुटनों से मुड़कर शेष–शय्या पर स्थित है तथा दायाँ पैर पद्मपत्र से सुशोभित आसन पर विराजमान लक्ष्मी के हाथों में स्थित है। नाभि से उत्पन्न कमल पर ललितासन–मुद्रा में ब्रह्मा विराजमान हैं। प्रतिमा के परिकर में नवग्रहों का सुन्दर अंकन किया गया है । प्रतिमा के दोनों पार्श्वों में एक–एक चाँवरधारिणी निरूपित हैं। शेष–शय्या के नीचे मत्स्य, कूर्म, निधिपात्र तथा दोनों पार्श्वों में एक–एक मकर मुख चित्रित है। प्रतिमा की पीठीका के दोनों ओर एक–एक गज का सुन्दर आरेख दृश्टव्य है। उक्त प्रतिमा लगभग 13 वीं शती ई. में निर्मित प्रतीत होती है। (चित्र सं. 3)

1. राजकीय संग्रहालय, अल्मोड़ा में प्रदर्शित शेषाशयी विष्णु की यह प्रतिमा द्वाराहाट (जनपद–अल्मोड़ा) से प्राप्त हुई है। शाश्वत् पुरूष विष्णु ध्यानस्थ एकार्णव जल के मध्य एक सिंहासन के ऊपर व्यवस्थित शेष कुण्डलियों पर योग निद्रा में चित्रित हैं। उनके मुकुट के ऊपर माला–तुल्य सात फण व्यवस्थित हैं। विष्णु का दक्षिण पाद शय्या के ऊपर से होता हुआ लक्ष्मी के हाथों में अवस्थित है जिसका वह अपने हाथों से संवाहन कर रही हैं। जानु से कुंचित वाम पाद शेष–शय्या पर संस्थित है। सभी आभूषणों से अलंकृत विष्णु का पहला हाथ जंघा पर प्रसारित है जिसमें वह भांख लिए हैं दूसरे में पद्म, तीसरे में गदा और चौथे हाथ में चक्र धारण किए हुए हैं। चरणों के समीप कमल पीठिका पर आसीन सर्वाभूशिता लक्ष्मी के नेत्र अर्द्धनिमीलित हैं। विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमल पर पद्मासनस्थ त्रिमुखी पितामह चतुर्भुज हैं। विष्णु को सौर मण्डल का देवता कहा गया है। ऊपरी परिकर में निर्मित पट्ट पर एक सीधी पंक्ति में अत्यन्त सजीवता के साथ नवग्रहों का अंकन किया गया है। पट्ट में दाईं ओर सूर्य उत्कुटिकासन–मुद्रा में, अन्य छः ग्रह क्रमबद्ध ललितासन मुद्रा में प्रदर्शित हैं एवं इनके पश्चात् राहु और केतु उकेरे गए हैं। प्रतिमा में सप्तफण के पीछे एवं लक्ष्मी के पीछे चाँवर–ग्रहिणी खड़ी हैं। शेष–शय्या के नीचे मत्स्य, कूर्म, मकर एवं निधि पात्र का चित्रण किया गया है। चरण–चौकी के दाएँ पार्श्व में कूर्च युक्त उपासक नमस्कार–मुद्रा में प्रदर्शित है एवं इसी प्रकार बाएँ पार्श्व में उपासिका अंकित है। चौकी के भद्र में देवनागरी लिपि के संस्कृत भाषा में एक

PURVA MIMAANSA

लेख उत्कीर्ण है जिससे यह ज्ञात होता है कि इस प्रतिमा का निर्माण शाके 11 (?) 6, (1136) में माघशीर्ष को बृहस्पतिवार के दिन किया गया था। तिथि के आधार पर यह प्रतिमा 1214 ई. में निर्मित है। (तिवारी, 2008, पृष्ठ 100–101)

2. **लक्ष्मीनारायण आसन प्रतिमा** :– इस रूप में लक्ष्मी को विष्णु की बाईं जंघा पर बैठी हुई दिखाया जाता है। इसी रूप में वे कभी विष्णु के साथ गरूड़ पर भी बैठी रहती हैं। ऐसी प्रतिमाएँ उमा–महेश्वर की प्रतिमाओं से साम्यता रखती हैं। विष्णु पुराण (3/4/27) में कहा गया है कि विष्णु ने अत्यन्त प्रीति वश अर्धांगिनी लक्ष्मी को अपने उत्संग में स्थान दिया। विष्णुधर्मोत्तर पुराण (85/47) में लक्ष्मी के लिए 'वामोत्संग गतापि वा' कहा गया है। श्रीमद्भागवत (3/15/39–49) के अनुसार विष्णु की चार भुजाएँ हैं। पीछे की भुजाओं में से एक समीप में खड़ी हुई लक्ष्मीजी की कमर के पास है। आगे की भुजाओं में से एक भुजा उनके समीप में स्थित गरूड़ के स्कन्ध पर रखी है और दूसरे हाथ से वे कमल पुष्प घुमा रहें हैं। समीप में लक्ष्मीजी स्थित हैं। लक्ष्मीजी के बाएँ हाथ में कमल है और दाहिना हाथ विष्णु के स्कन्ध पर रखा है। सभी आयुध मूर्तरूप में उपस्थित होने चाहिए।

1. विशाल परिकर युक्त एक प्रतिमा अल्मोड़ा नगर में स्थित रघुनाथ मन्दिर में विद्यमान है। इसमें विष्णु अपना बायाँ पैर मोड़कर पद्म–पीठ पर रखे हैं और दाहिना ललितासन–मुद्रा के समान नीचे लटकाए हैं जिसे पद्म–पीठ के नीचे अंकित गरूड़ अपने दाहिने हाथ में धारण किए हैं। विष्णु की मुड़ी हुई वाम जंघा पर लक्ष्मी अपनी दक्षिण जंघा मोड़कर बैठी हैं और ललितासन–मुद्रा में बायाँ पैर नीचे लटकाए हैं जिसे गरूड़ अपने बाएँ हाथ से आश्रय दिए हैं। विष्णु और लक्ष्मी एक समान वस्त्राभूषणों से अलंकृत हैं। चतुर्भुज विष्णु के पहले हाथ में भांख, दूसरे में गदा, तीसरे में चक्र और पद्म युक्त चौथा हाथ देवी के वाम वक्ष का स्पर्श करते हुए अंकित है। द्विभुजी देवी बाएँ हाथ में पूर्ण विकसित पद्म लिए हैं और उनका दायाँ हाथ विष्णु के दाएँ स्कन्ध पर दर्शाया गया है। प्रतिमा के ऊपरी परिकर में नवग्रहों के ऊपर निर्मित त्रिरथ रेखा शिखर युक्त तीन रथिकाओं में दाईं से बाई ओर क्रमशः विष्णु (स्थानक), शिव (नंदी पर आरूढ़) और ब्रह्मा (हंस पर आरूढ़) अंकित हैं। इसके अतिरिक्त दाईं छोर की रथिका में सूर्य–नारायण एवं बाईं ओर की रथिका में कल्कि का चित्रण हुआ है। प्रतिमा के पार्श्व परिकर में दशावतारों का सुन्दर निरूपण किया गया है जिनमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, परशुराम, बलराम आदि अंकित हैं। अलंकरण एवं भौली के अधार पर यह प्रतिमा लगभग 15 वीं भाती ई. की निर्धारित की जा सकती है। (चित्र सं. 4)
2. अल्मोड़ा नगर में स्थित सिद्ध भैरव मंदिर (चौघानपाटा) के गर्भगृह में विष्णु लक्ष्मी के साथ गरूड़ के ऊपर ललितासन–मुद्रा में बैठे हैं। गरूड़ पुरूष विग्रह में निर्मित हैं तथा

PURVA MIMAANSA

करण्ड–मुकुट, कुण्डल, कंकण, केयूर, नूपुर आदि सामान्य आभूषणों से भूषित हैं। वे अपने दाएँ हाथ में विष्णु का दायाँ पैर एवं बाएँ हाथ में लक्ष्मी का बायाँ पैर थामे हैं। कमल पीठीका पर ललितासन–मुद्रा में बैठे चतुर्भजी विष्णु के निचले दाएँ हाथ में शंख, ऊपरी दाएँ हाथ में गदा और ऊपरी बाएँ हाथ में चक्र धारण किए हैं। वे पद्म युक्त निचलेबाएँ हाथ से लक्ष्मी को आलिंगन किये हुए हैं। उनकी बाईं जंघा पर विराजमान द्विभुजी लक्ष्मी का दायाँ हाथ नारायण के दाएँ स्कन्ध पर स्थित है और बाएँ हाथ में पद्म अंकित है। किरीट–मुकुट, कुण्डल, कंठहार, ग्रैवेयक, भुजबंध, कंकण, नूपुर एवं अधोवस्त्र आदि से विष्णु व लक्ष्मी दोनों को एक समान रूप से अलंकृत किया गया है। विष्णु यज्ञोपवीत धारण किये हुए हैं। भौली के अनुसार यह प्रतिमा लगभग 15–16 वीं भाती ई. की प्रतीत होती है।

3. नंदादेवी मंदिर के समीप अवस्थित विष्णु मंदिर में स्थापित स्थानक विष्णु प्रतिमा में आयुध पुरूषों का सुन्दर अंकन दृश्टव्य है। अत्यधिक अलंकृत यह प्रतिमा कत्यूरी कला के रूढ़िवादी युग की प्रतिनिधि उदाहरण है। इसी प्रकार पलटन बाजार की स्थानक विष्णु प्रतिमा में आयुध पुरूषों के अंकन के साथ–साथ दशावतारों से सुशोभित परिकर निर्मित है। कपीना नौले में विद्यमान शायन विष्णु प्रतिमा का मध्यवर्ती भाग नवग्रहों से अलंकृत है जो कि कला की दृश्टि से रोचक है। रघुनाथ मंदिर में स्थापित आसन विष्णु प्रतिमा चंद कालीन कला का प्रतिनिधि उदाहरण है। इस प्रतिमा का परिकर विशेष उल्लेखनीय है।

अल्मोड़ा विषयक उपरोक्त प्रतिमाओं के अध्ययन से स्पष्ट है कि कत्यूरी शासकों द्वारा एक विकसित कला भौली के संवर्धन के प्रयास किये गए एवं परवर्ती चंद शासकों ने भी उनका अनुसरण किया। यहाँ से प्रकाश में आई विष्णु प्रतिमाओं से स्पष्ट है कि शिल्पी द्वारा विष्णु कि विविध स्वरूपों यथा – स्थानक, शयन एवं आसन का प्रतिमांकन कर, इस कार्य में शास्त्रीय निर्देषों का पालन किया गया।

संदर्भ सूची

रूपमण्डन : 3/29–30

ऋग्वेद : 1/155/5, 7/99/2

महाभारत : शांतिपर्व, अध्याय 341, श्लोक 42–43

विष्णु पुराण : 3/4/27

विष्णुधर्मोत्तर पुराण : 81/2–8

तिवारी, देवकीनन्दन : राजकीय संग्रहालय अल्मोड़ा की प्रस्तर प्रतिमाएं, 2008, अल्मोड़ा

रघुवंश : 13/6

रंजना : ब्राह्मण ग्रन्थ – एक अनुशीलन, शिवराधना प्रकाशन, इलाहाबाद, 1988

श्रीमद्भागवत : 3 / 15 / 39–49

श्रीवास्तव, ब्रजभूषण : प्राचीन भारतीय मूर्तिकला एवं प्रतिमा विज्ञान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1998

शतपथ ब्राह्मण : 14 / 1 / 1 / 5

सूर्यकान्त : वैदिक देवशास्त्र, मेहरचन्द लछमनदास पब्लिकेशन, दिल्ली, 1961

वृहत्तसंहिता : 58 / 31–35

जोशी, नी. पु. : मध्यकालीन विष्णु मूर्तियों से संबन्धित कुछ शब्द, संग्रहालय पुरातत्त्व पत्रिका, 1970

अग्नि पुराण : 44 / 47–49

अपराजितपृच्छा : 219 / 1–9

अवस्थी, रामाश्रय : खजुराहो की देव प्रतिमाएँ, ओरिएण्टल पब्लिशिंग हाउस, आगरा, 1967

अग्रवाल, वासुदेवशरण : मथुरा कला, गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद, 1964

Banerjea, J. N. The Development of Hindu Iconography, University of Culcutta, 1974.

Joshi, N. P. Use of Auspicious Symbols in the Kushan Art of Mathura, Government Museum, Mathura, 1965, Page 311-17.

Wilkins, W. J. Hindu Mythology, Vedic and Puranic, Thacker, Spink & co London, 1972.

PURVA MIMAANSA